## पद ३३

(राग: भैरवी - ताल: दीपचंदी)

माणिकप्रभुवर नामासी घ्या। न तुलती वेदादि प्रतापासी ह्या।।ध्रु.।। सुरवर ऋषिगण गंधर्वादिकां। त्रिभुवनीं सर्व मनोरथ पूरका। भक्तमनोरथ कल्पतरू। मनोहर म्हणे एक हा श्रीगुरू।।१।।